



Shree Vasishtha Vidhyalaya

Hindi 2nd Language Worksheet : 2026-27

Name : - _____

Std.:- III - _____

Roll No. :- _____

Worksheet No. TA1-05

Date : - _____

रचनात्मकता : अपठित गद्यांश

एक जंगल में एक बहुत ऊँचा पेड़ था। वह अपनी ऊँचाई और घने पत्तों पर बहुत घमंड करता था। उसके नीचे छोटी छोटी घास के तिनके उग रहे थे। वह घास को देखकर कहता, “तुम कितनी छोटी हो, न तुम्हारे पत्ते हैं न छाया देने की ताकत।” घास शांत रहती और विनम्रता से कहती, “बड़ा होना ही सब कुछ नहीं है।” एक दिन भयंकर तूफान आया। बड़े - बड़े पेड़ टूटकर गिरने लगे। वह घमंडी पेड़ भी तूफान में गिर कर टूट गया। घास जैसी थी वैसी ही खड़ी थी।

सीख : जो घमंड करता है एक दिन अवश्य टूटता है।

प्र-१ उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क) एक शब्द में उत्तर लिखो।

१) पेड़ का स्वभाव कैसा था ? -

२) शांत और विनम्र कौन था ? -

ख) शब्दार्थ लिखो।

१) वृक्ष -

३) शक्ति -

२) अहंकार -

ग) वाक्य पूरा करो।

१) जो घमंड करता है

प्र-२ प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखो।

१) अंकुर का स्वभाव कैसा था ?

उत्तर :

२) दूधवाला किसका दूध लाया ?

उत्तर :

३) शेरनी किसके साथ खेल रही थी ?

उत्तर :

४) आरुषि दुकान पर क्यों जाती थी ?

उत्तर :

प्र-३ किसने, किससे कहा -

१) “आज नहीं, पर एक दिन जरूर बताऊँगी।” -

२) “मैम, पेंसिल की छीलन को रंगकर।” -

प्र-४ रिक्त स्थान पूर्ण करो ।

- १) दूध में नामक प्रोटीन होता है । (केसीन, हीमोग्लोबिन)
- २) किसी चीज को व्यर्थ नहीं फेकती थी । (विभा, आरुषि)
- ३) बच्चे सुंदर - सुंदर लेकर आए । (उपहार, हार)
- ४) पिल्ला शेरनी पर कूदने लगा । (दुखी-दुखी, खुशी-खुशी)

गिनती

प्र-१ अंको को जोड़कर शब्दों में लिखो ।

- | | |
|--------------------|-------------------|
| क) १८ + १८ = ... | ग) १० + ८ = ... |
| ख) २० + २० = ... | घ) ९ + ९ = ... |

प्र-२ पहले का और बाद का अंक लिखो ।

- | | |
|-------------------|-------------------|
| क) १९ | ग) ४८ |
| ख) ३५ | घ) ३९ |

व्याकरण

प्र-१ वाक्य में आए सर्वनाम शब्द पर 'गोल' करो ।

- | | |
|-------------------------|---------------------------|
| १) आज मैं गाँव जाऊँगा । | ३) यह मेरा घर है । |
| २) तुम घर कब जाओगे ? | ४) वे दोनों खेल रहे हैं । |

प्र-२ चित्र देखकर क्रिया शब्द लिखो ।



.....

कविता : चींटी

हर पल चलती जाती चींटी,
श्रम का राग सुनाती चींटी ।
कडी धूप हो या हो वर्षा,
दाना चुनकर लाती चींटी ।
सचमुच कैसी कलाकार है,
घर को खूब सजाती चींटी ।

छोटा तन, पर बड़े इरादे,
नहीं कभी घबराती चींटी ।
नन्हे-नन्हे पैर बढाकर,
पर्वत पर चढ जाती चींटी ।
मेहनत है पूजा प्रभु की,
हमको यही सिखाती चींटी